Dr. Priti Ranjan
H. D. Jain College
Deptt of History
B. A Part - I
Paper - I
Topic - Maurya Samrajya Ka Patan

(। । यह सत्य है कि)

मौर्य साम्राज्य के पतन के कारणों का विश्लेषण करें?

⇒ अशोक ने सैंतीस वर्ष तक शासन किया और 232 ई० पू० में उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के साथ ही राजनीतिक ह्रास का सूत्रपात हुआ और जल्दी ही मौर्य साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। यह सही है कि जिस साम्राज्य की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी और जिसको अशोक ने बढ़ाया था वह बहुत तक सुरक्षित नहीं रह सका। अतीत में निश्चय के साथ कहा जाता रहा है कि मौर्य साम्राज्य का पतन मुख्यतः अशोक की नीतियों के कारण हुआ।

लेकिन इस बात में भी कोई सत नहीं है कि जब 184 ई० पू० में मौर्य वंश का अंतिम सम्राट वृहद्रथ अपने सेनापति पुष्यमित्र के हाथों मारा गया तो मौर्यवंश का नाम संसार से उठ गया। अब प्रश्न उठता है कि मौर्य के विशाल साम्राज्य का विघटन इतना शीघ्र कैसे हो गया? इसके क्या कारण थे? इस विषय में विद्वानों में मतभेद है।

डा० एच सी० राय चौधरी

का कहना है कि अहिंसक तथा शांति प्रिय नीति ही मौर्यवंश के शीघ्र पतन का कारण है। और इसी कारण मौर्य सेना में युद्ध के प्रति उदासीनता उत्पन्न हुई। जिससे बाहरी शक्तियों के लिए भारत पर आक्रमण करना सरल हो गया था।

महामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री

ने अशोक की ब्राह्मण-विरोधी नीति को मौर्यवंश के पतन के लिए अपराधी ठहराया है कि अशोक या यूँ कहें कि संपूर्ण मौर्यवंश अनीश्वरवादी धर्म में विश्वास करता था। इसमें संदेह नहीं कि अशोक की नीति में ने लोगों से ब्राह्मणों को भी आदर करने को कहा। अशोक की नीति भले ही सहनशील हो ब्राह्मणों में उसके प्रति विद्वेष की भावना जगने लगी। इस प्रकार मौर्यवंश के खंडहर पर शुंग, कण्व एवं सातवाहन आदि ब्राह्मण वंश का उदय हुआ, किन्तु कुछ इतिहासकारों का कहना है कि उसकी सामान्य नीति न तो विशिष्ट रूप से बौद्ध-समर्थक थी और न ब्राह्मण-विरोधी।

डी० एन० झा

ने कमजोर उत्तराधिकारी को मुख्य कारण कहा है।

चंद्रगुप्त मौर्य बिंदुसार और अशोक शक्तिशाली तथा कर्मठ शासक थे और उन लोगों के समय मौर्य साम्राज्य सुचारु रूप से चलता रहा। अशोक के पश्चात् कोई और योग्य शक्तिशाली मौर्य शासक नहीं हुआ जिसके फलस्वरूप केंद्रीय सत्ता कमजोर हो गई। राजा के परिवर्तित होने का अर्थ निष्ठा की नए सिरे से स्थापना था इससे भी बुरी बात अधिकारियों का परिवर्तन था क्योंकि नियुक्तियों की प्रणाली निरंकुश थी वो इतने भी योग्य नहीं थे कि देश में पूर्ण शान्ति और व्यवस्था बनाये रखते। उनमें साम्राज्य के विघटन को रोकने की न शक्ति थी, न इच्छा। राजा का कार्य सामाजिक व्यवस्था की रक्षा करना और उसे कायम रखना था। उन्होंने अशोक से अहिंसा का उपदेश तो ग्रहण कर लिया था किन्तु उसकी प्रजा-वत्सलता और शासन को सुव्यवस्थित रखने की प्रतिभा को ग्रहण नहीं किया था।

डी० डी० कोशाम्बी

ने मौर्यकालीन संकटग्रस्त आर्थिक स्थिति को पतन के लिए जिम्मेदार माना है। यह धारणा अधिक सही प्रतीत होती है कि मौर्य अर्थव्यवस्था पर बहुत अधिक दबाव पड़ रहा था। सेना की रक्षा के लिए, अधिकारियों को वेतन देने तथा नई साफ की गई भूमि पर बस्तियाँ बसाने के लिए बहुत बड़े परिमाण में राजस्व की आवश्यकता ने कोष को निश्चित रूप से भारग्रस्त किया होगा। मौर्य शासनकाल में प्रजा पर अत्यधिक कर लगाये गये थे तथा अशोक की दानशीलता एवं स्तूपों विहारों शिलालेखों स्तम्भलेखों के निर्माण करने की नीति के फलस्वरूप राजकोष रिक्त होना लगा था। विदेशों में भी धर्म-प्रचार के लिए काफी धन व्यय किया जाता था।

साम्राज्य का विभाजन :

पतन का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण साम्राज्य का दो भागों में विभाजन था। अशोक की मृत्यु के बाद पूर्वी साम्राज्य का शासक दशरथ बना और पश्चिमी का कुणाल। डॉ० रोमिला थापर का कहना है कि "अगर विभाजन न हुआ होता तो उत्तर-पश्चिम के यूनानी आक्रमण को कुछ समय के लिए रोका जा सकता था।" विभाजन के बाद शासन-व्यवस्था में कुछ ढील अवश्य आ गयी होगी।

पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त ⇒

अशोक देश और विदेशों में मुख्यत: धर्मप्रचार के काम में ही व्यस्त रहा अत: ध्यान नहीं दे सके कि पश्चिमोत्तर सीमावर्ती दर्रे की रक्षा कैसे हो। चीन के राजा शीह हुआंग ती ने इन शकों के हमले से अपने साम्राज्य की रक्षा के लिए लगभग 220 ई० पू० में चीनी महा दीवार बनवाई। गार्गी संहिता से पता चलता है कि यूनानी सेना मध्य देश पर विजय करती हुई पुष्पपुर (पाटलिपुत्र) तक पहुँच गई। इस आक्रमण के फलस्वरूप मौर्य शासक जनता की दृष्टि में अवश्य ही गिर गए होंगे। अत: मौर्य साम्राज्य अधिक दिनों तक नहीं टिक सका।

दोषपूर्ण शासन - व्यवस्था

मौर्य साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण वह राज्य - व्यवस्था थी जिसमें एक राजा के पश्चात् उसका पुत्र सिंहासन पर बैठता था, चाहे वह कितना ही अयोग्य क्यों न हो व्यक्तिगत शासन की सफलता शासक की व्यक्तिगत योग्यता और प्रजा के हित की भावना पर निर्भर करती है। अशोक के उत्तराधिकारियों में इन गुणों का अभाव था।

डा० रोमिला थापर

मौर्य साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण मौर्यकालीन शासन - व्यवस्था ही थी। उनके अनुसार " मौर्य साम्राज्य के पतन की सन्तोषजनक व्याख्या, सैनिक अकर्मण्यता, ब्राह्मणों का असन्तोष, सार्वजनिक विद्रोह या आर्थिक दबाव के आधार पर नहीं की जा सकती। " उनका मत है कि पतन का मुख्य कारण केन्द्रीय नौकरशाही व्यवस्था और राज्य अथवा राष्ट्र के विचार का अभाव था।

अत: निष्कर्ष में कह सकते हैं कि " मौर्यों के पतन का मुख्य उत्तरदायित्व ऐसे ~~अत्यधिक~~ केन्द्रीत शासन को जिसमें सम्पूर्ण सत्ता कुछ व्यक्तियों के हाथों में थी और किसी भी प्रकार की राष्ट्रीयता की भावना के अभाव को दिया जाना चाहिए। " इसके अतिरिक्त, गम्भीर आर्थिक असमानताओं और सांस्कृतिक प्रगति के आधार पर सम्पूर्ण साम्राज्य को एकता के सूत्र में बाँधा कर रखना कठिन था।

इस प्रकार मौर्य साम्राज्य का पतन प्राय: उन्हीं कारणों से हुआ जिनके कारण अन्य साम्राज्यों का पतन हुआ था। अयोग्य उत्तराधिकारी, विघटनात्मक प्रवृत्ति का उदय, आवागमन के साधनों का अभाव, यातायात-व्यवस्था का उचित न होना, देश में राष्ट्रीयता की भावना का अभाव, ~~श्रेष्ठता~~ योग्यता के आधार पर कर्मचारियों की नियुक्ति न होना, महल के षड्यंत्र, नौकरशाही व्यवस्था आदि मौर्य साम्राज्य के पतन के मुख्य कारण थे। अतएव साम्राज्य के पतन के लिए अशोक को पूर्ण रूप से उत्तरदायी ठहराना उपयुक्त एवं तर्कसंगत नहीं लगता है। ~~क्योंकि~~ ~~क्योंकि~~ वह आंशिक रूप से उत्तरदायी माना जा सकता है।

अत: साम्राज्य स्थापित करने की इच्छा तो लुप्त नहीं हुई, किन्तु उसमें वह व्यापकता और तीव्रता नहीं रह गई, जिससे पहले साम्राज्यों का निर्माण हुआ था।